

स्नातकोत्तर अध्ययनकार्य-क्रमस्य उद्देश्यम्(Programme specific outcomes (

- अस्माकं संस्कृतिः संस्कृताश्रिता तस्मात् संस्कृतशास्त्राणाम् अध्ययनम् अत्यावश्यकं वर्तते ।
- स्नातकोत्तरोपाधौ निर्धारितविषयेषु भाषाकौशलेन संस्कृतशास्त्राध्ययने प्रवेशः सुकरः भवति ।
- भारतीयानां सर्वासां सद्विद्यानां मूलं वेदाः तदनुकूलशास्त्राणि च वर्तन्ते । अतस्तेषाम् अध्ययनम् अनिवार्यम् ।
- व्याकरणशास्त्रीयसिद्धान्तद्वारा भाषासिद्धान्तानां रचनात्मकावबोधसम्पादनम्, नूतनशब्दनिर्माणञ्च
- नाटकरचनाशैल्याः अभिवर्धनम्, यतोहि साहित्यं सहजतया व्यावहारिकं ज्ञानं वर्धयति समाजं सन्मार्गं नयति ।
- आधुनिकसंस्कृतसाहित्यस्य परिचयेन रचनाशैल्यां नूतनविचाराणां प्रतिपादनम् ।
- अस्मत्पूर्वजानां काव्यकाराणां काव्यरचनाशैल्याः ज्ञानप्रदानम् नूतनकाव्यादिसर्जनकौशलस्य , विकाससम्पादनम् ।
- संस्कृतगद्यस्य अध्ययनेन गद्यावगमने लेखने च पाटवम् ।
- योगस्य सैद्धान्तिकप्रायोगिकपक्षयोः नैपुण्यम्, विभिन्नदर्शनशास्त्राध्ययनेन तत्त्वज्ञानस्पष्टता विवेकज्ञानञ्च ।
- पाणिनीयव्याकरणस्य वैज्ञानिकतासाधकानां धातुप्रत्ययादीनां गभीराध्ययनाय अवसरप्रदानमस्ति ।
- भारतीयज्ञानपद्धत्या चिन्तनधारायां परिवर्तनं भविष्यति ।
- संस्कृतभाषया पठनलेखनसंभाषणानाम् अभिवृद्धिः ।
- उपाधिरयं प्रतिष्ठां वृत्तिञ्च प्रददाति ।

(भाषया-हिन्दी)

स्नातकोत्तर उपाधि के उद्देश्य—) Programme specific outcomes (

- हमारी संस्कृति संस्कृत पर आश्रित है अतः संस्कृत शास्त्रों का अध्ययन अति आवश्यक है ।
- स्नातकोत्तर उपाधि में निर्धारित विषयों में भाषा कौशल को पढ़ने से संस्कृतशास्त्र के अध्ययन में सरलता होगी ।
- सभी भारतीय सद्विद्याओं का मूल वेद और वेदानुकूल शास्त्र है, अतः उनका अध्ययन अनिवार्य है ।

- व्याकरण शास्त्रीय सिद्धांतों के द्वारा भाषा सिद्धांतों रचनात्मक अवबोध संपादन तथा नए शब्दों का निर्माण करना ।
- नाटक रचना शैली का अभिवर्धन करना क्योंकि साहित्य व्यावहारिक ज्ञान बढ़ाता है तथा समाज को अच्छे मार्ग पर ले जाता है
- आधुनिक संस्कृत साहित्य के परिचय से रचना शैली में नए विचारों का प्रतिपादन करना ।
- हमारे पूर्वजों की काव्य रचना शैली का ज्ञान प्रदान करना तथा नूतन काव्य सर्जन कौशल का विकास करना ।
- संस्कृत गद्य के अध्ययन से गद्य को समझने तथा लिखने में पाठव लाना ।
- योग के सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक पक्षों में निपुणता प्रदान करना तथा विभिन्न दर्शन शास्त्रों के अध्ययन से तत्त्वज्ञान स्पष्टता और विवेक ज्ञान प्रदान करना ।
- पाणिनीय व्याकरण की वैज्ञानिकता से धातु प्रत्यय आदि के विषय में अध्ययन का अवसर प्रदान करना ।
- भारतीय ज्ञान पद्धति से चिंतन धारा में परिवर्तन होगा ।
- संस्कृत भाषा के द्वारा पठन, लेखन और संभाषण कौशलों में वृद्धि करना ।
- यह उपाधि प्रतिष्ठा और वृत्ति को देने वाली है